डॉ० फुलेश्वर मिश्र

जन्म : 15-09-1945 ई०।

जन्म-स्थान : महिषी, सहरसा

मृत्यु : 28-9-1988 ई० ।

कृति : **'संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाइँ'** पोथी, मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित। आलोचनात्मक निबंध समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित ।

माध्यमिक परीक्षा बनगाँव महिषीसँ, बी.ए. आनर्स एवं एम.ए., पटना विश्वविद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ कयलनि । मैथिलीक संत कवि लक्ष्मीनाथ गोसाइँ पर शोधकार्य कऽ पी-एच.डी. उपाधिसँ विभूषित भेलाह तथा बी.एन.कॉलेजमे प्राध्यापक बनि जीवनपर्यन्त अध्यापन करैत रहलाह।

पाठ-सन्दर्भ : एहिठाम लक्ष्मीनाथ गोसाइँ सन महात्माक जीवनी लिखि लेखक सर्वधर्म समभावक चित्रण कयलनि अछि। गोसाइँ जीक शिष्य होयबामे कोनो जाति-धर्म-सम्प्रदाय बाधक नहि छल। ई सर्वमान्य संतक जीवनीक उल्लेख कऽ तद्युगीन बन्धनसँ समाजकेँ मुक्त करबाक चेष्टा कयलनि अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाइँ

भारत एक एहन देश अछि जतऽ अनेको महात्मा जन्म लऽ लोककेँ जीवनक कष्टसँ मुक्त होयबाक संदेश देलनि। ई महात्मा लोकनि संसारमे व्याप्त अभेद्य अज्ञानक अन्धकारकेँ मेटयबाक प्रयत्न कयलनि तथा संसारमे ज्ञानक प्रकाशकेँ पसारलनि। जखन संसारसँ धर्म-अधर्मक ज्ञान लुप्त भऽ जाइत अछि तँ लोक अधर्मोकेँ धर्म मानि लैत अछि। संसारमे जखन स्वार्थी लोकक बोलबाला भऽ जाइत अछि, तखनहि एहि तरहक महात्माक जन्म होइत अछि जे लोककेँ दु:खसँ मुक्तिक मार्ग देखबैत छथि। एहि तरहक महात्मामे मिथिलाक सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाइँक नाम श्रद्धापूर्वक लेल जाइत अछि।

लक्ष्मीनाथ गोसाइँक जन्म कोशी प्रमण्डलक सहरसा जिलाक अन्तर्गत परसरमा ग्राममे 1787 ई० मे भेल छलनि। लक्ष्मीनाथक पिता पं० बच्चा झा एक प्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण एवं धार्मिक प्रवृत्तिक व्यक्ति छलाह। हिनक पिताक व्यवसाय खेती छलनि। लक्ष्मीनाथक माय अत्यन्त साध्वी आओर व्रतोपवासमे संलग्न रहयबाली छलीह। तद्युगीन सामान्य कृषकक पुत्र जकाँ अपन घरक एक सहयोगीक रूपमे लक्ष्मीनाथ सेहो बाल्यावस्था प्रारंभ कयलनि। प्रकृतिक उन्मुक्त वातावरणमे विचरण कयलासँ बच्चा निडर, स्वस्थ आओर साहसी बनैत अछि तथा विविध वनस्पति एवं वन-पशुक साहचर्यसँ ओकरामे कृषि-चेतनाक बीजारोपण सेहो होइत छैक, एहि बातकेँ ध्यानमे राखि गाय चरयबाक भार लक्ष्मीनाथकेँ देल गेलनि। क्रीड़ाक रुचि हिनकामे सामान्य बालकसँ भिन्न छल। गाछक डारिमे झूला झुलबाक बजाय ई पयर बन्हबाय कतेको घंटा उनटा लटकबाक तमाशा देखबैत छलाह। कबड्डी-चिक्कामे बहुत काल धरि दम साधि लोककेँ चौंकबैत छलाह आओर पानिमे डुबकी लगबैमे सभकेँ पराजित करैत छलाह। विनोदार्थ ई हठयोगक क्रिया सेहो करैत छलाह तथा अनायास हिनका मुहसँ एकाध दोहा सेहो बहरा जाइत छलनि।

पुत्रवत्सल पिता लक्ष्मीनाथकेँ शिक्षित करबाक उद्देश्यसँ कोनो विद्यालय पठायब उचित बुझि शास्त्रविहित उपनयन संस्कारक बाद दरभंगा जिलान्तर्गत जोंकी महिनाथपुर निवासी पं० रत्ते झाक ओहिठाम विद्याध्ययनक हेतु पठा देलनि। लक्ष्मीनाथक गुरु पं० रत्ते झा अपना समयक लब्धप्रतिष्ठित ज्योतिषी आओर तांत्रिक मानल जाइत छलाह। बहुत कम समयमे लक्ष्मीनाथ हुनक अत्यन्त प्रिय छात्र बनि गेलाह। ओहिठाम सेहो गुरुक परोक्षमे पोथीक सहयोगसँ ई हठयोगक क्रियाक अभ्यास करैत छलाह। ओतहि ई तंत्र-साधनामे अत्यधिक परिश्रम कयलनि। एहि साधना पद्धति पर विश्वास राखयबला छात्रपर तांत्रिक गुरुक संगतिक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक कहल जायत। ओहिठाम ई ज्योतिषक अतिरिक्त वेदान्त सेहो पढ़लनि। उपनिषदमे हिनक रुचि सभसँ अधिक छलनि जे अन्त धरि विद्यमान रहलनि। छात्रावस्थामे हिनक असाधारण प्रतिभा देखि गुरु हिनक आदर करैत छलथिन।

पूर्ण योग्यताकेँ प्राप्त कऽ लक्ष्मीनाथ अपन गाम अयलाह। पिता पुत्रकेँ वयस्क देखि कहुआ निवासी श्री सीखादत्त ठाकुरक कन्यासँ हिनक विवाह करबौलथिन। संन्यासी शंकरक व्यक्तित्व-कृतित्वसँ अनुप्राणित हिनका हेतु विवाहित जीवनक औचित्यक प्रति आश्वस्त भऽ गार्हस्थ्यमे लिप्त भऽ जायब सम्भव नहि छल। हिनक चित्त अशान्त रहय लागल, आ एहि अशान्तिसँ एकान्त चिन्तन बढ़ल। पारिवारिक जीवन हिनका हेतु जेल सदृश प्रतीत होअय लागल। महात्मा सभक सम्पर्कक लेल ई उत्कंठित रहय लगलाह। तखनहि एकटा घटना घटल, जे घरक कर्त्ता-धर्त्ता पैघ भायकेँ किछु कालक हेतु कोनो सम्बन्धीक ओहिठाम जाय पड़लनि। जयबाक समय अपन अनुपस्थितिमे माल-जाल देखबाक भार लक्ष्मीनाथकेँ दऽ गेलाह। आन्तरिक पीड़ाक व्यग्रताक कारणेँ हिनका माल-जालक चारा-पानिक ध्यान नहि रहलनि। हिनक सम्पूर्ण समय सोचबेमे बीति गेलनि। सम्बन्धीक ओहिठामसँ अयलापर पैघ भाय गाय-बड़दकेँ भूख-पियाससँ व्याकुल देखि लक्ष्मीनाथकेँ बजाय असावधानीक लेल डँटलथिन आओर कहलथिन जे एहन लापरवाह घरमे नहि रहथि सैह नीक। पैघ भायक बात लक्ष्मीनाथक हृदयकेँ हिलोरि देलकनि। परिवारक प्रति अनुराग कम भेलाक बाद आन्तरिक वियोग आओर

प्रज्वलित भऽ माया-मोहक सूत्रकेँ सुड्डाह कऽ देलकनि। ई ओही राति घरसँ चुपचाप पड़ा गेलाह। चलबा काल बिछाओनपर निम्नलिखित पद छोड़ि गेलाह:-

चलिये कंत ओहि देश जहाँ निज घर अपना
पंचरंग महल देखि मत भूलहुँ यह सुख जानहुँ निशि सपना ।।1।।
यह संसार फूल सीमरके अन्दर रुइया रे सुगना
सुत वित नारि भवन कुल परिजन यह सब चमकत चारि दिना ।।2।।
जल थल अनल आकाश पवनकृत विकसित वारिज एक छना
"लक्ष्मीपति" भ्रम त्यागि भजन करू तिह पर ठाकुर एक जना ।।3।।

पैघ भायक स्नेह लक्ष्मीनाथपर अत्यधिक छलनि। हुनका मुहसँ लक्ष्मीनाथक सौम्यता, योग्यता, काव्य-कुशलताक सतत प्रशंसा होइत छल। एहि तरहेँ छोट भायकेँ घरसँ चलि गेलापर अत्यधिक पश्चात्ताप भेलनि। राति भरि ओ भूखल आओर जागल रहलाह। भोरे उठि दौड़-धूप एवं पूछ-ताछ कयलापर कोनो तरहक पता नहि पाबि हतप्रभ भऽ गेलाह। समाजमे बदनामीक डर फूटे छलनि। व्याकुलता संकल्प रूप लऽ लेलक। येनकेन प्रकारेण लक्ष्मीनाथकेँ तकबाक निश्चय कऽ ओ भूखल-पियासल घरसँ विदा भऽ गेलाह। घुमैत-फिरैत ज्ञात भेलनि जे लक्ष्मीनाथ सिंहेश्वर स्थान दिस गेल छथि । सिंहेश्वर स्थान गेलापर देखैत छथि जे लक्ष्मीनाथ भूख-पियाससँ दुर्बल भेल मन्दिरक एक कोनमे बैसल छथि। प्रेम-पूर्वक लालित-पालित अनुजक दुर्दशा देखि हुनका आँखिमे नोर भरि गेलनि आ दौड़िकेँ लक्ष्मीनाथकेँ अपना हृदयसँ लगा लेलनि। मुदा ताबत धरि लक्ष्मीनाथक मन पूर्ण रूपेँ वैरागी भऽ गेल छलनि। अग्रजक ममता आओर आवेशयुक्त वाणी चुपचाप सुनैत रहलाह। जबाबमे अनुजसँ ज्ञानयुक्त वाणी सुनि घबरा गेलाह। पुनः ओ लक्ष्मीनाथसँ कहलनि जे जँ अहाँ घर नहि चलब तँ समाजमे हम कलंकित होयब आ एहि कलंकक कारणेँ जीवन भरि हम कलपैत रहब; एहिसँ बढ़िया यैह होयत जे हमहूँ घर नहि जाइ। एहि बातपर लक्ष्मीनाथ निरुत्तर भऽ शर्त्त रखलनि जे हम परिवारमे वैरागी जकाँ रहब आओर जखन कतहु जयबाक इच्छा होयत तँ हमरा केओ नहि रोकथि। हारिकेँ अग्रजकेँ शर्त्त स्वीकार करय पड़लनि।

एहि घटनाक बादे लक्ष्मीनाथक द्विरागमन करबा देल गेल। ई पत्नीसँ भेंट भेलापर अपन वैराग्य धारण करबाक अभिप्राय हुनका समक्ष रखलनि। पत्नी अत्यन्त साध्वी, रूपवती, सुशील आओर समर्पणमयी छलथिन। भव्य, सुयोग्य युवा पतिक मुहसँ वैराग्यक बात सुनि विकल भऽ गेलीह। ओ हिनक चरण पकड़ि अपन अपराध पुछलथिन। से देखि ई अपन साध्वी पत्नीकेँ शान्ति-पूर्वक कतेको दिन धरि ज्ञानोपदेश दैत रहलाह। वैरागी लक्ष्मीनाथ शान्त भावेँ पत्नीसँ कहलनि– "दाम्पत्य भावक प्रयोजन मात्र पुत्र लाभ अछि, विषय भोग नहि। अहाँ ब्राह्मणक पुत्री छी। ब्राह्मणीकेँ विषय-वासनासँ सतत विरक्त रहबाक चाही।" पतिक चरित्रपर अगाध श्रद्धा हुनका पहिनहिसँ छलनि। अन्तमे ओ प्रेम-विह्वल पतिक मधुर निष्कलुष वाणीसँ अनुप्राणित भेलीह, तथापि नारीत्व एवं वंश-रक्षार्थ ओ पुत्रक याचना कयलनि। जनश्रुति अछि जे ई आजीवन विरक्त रहलाह तथापि पत्नीकेँ पुत्र प्राप्तिक आशीर्वाद देलथिन आओर से फलित भेल। एकर बाद सम्पूर्ण परिवारसँ, विशेष रूपेँ ज्येष्ठ भ्राता एवं पत्नीसँ अनुमति लऽ लक्ष्मीनाथ पशुपतिनाथक यात्रापर प्रस्थान कयलनि।

लक्ष्मीनाथक जीवनक लेल नेपालक सुप्रसिद्ध तीर्थ पशुपतिनाथक यात्रा महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। ओतय हिनका विभिन्न तरहक छोट-पैघ साधु सन्तक सम्पर्कक अवसर प्राप्त भेलनि। ओहि समयमे ओम्हर नाथपंथी योगीक पहुँच सर्वाधिक छल। ओहिठाम तंत्रक प्रभाव सेहो सर्वाधिक छल। लक्ष्मीनाथकेँ पशुपतिनाथ पहुँचबाक किछुए दिनक बाद अकस्मात् काठमांडुपर अंग्रेजक आक्रमण भेल। आतंकित जनसमुदाय अस्त-व्यस्त भऽ जतय-ततय भागय लागल आ तीर्थस्थान वीरान भऽ गेल। लक्ष्मीनाथ पहाड़ी क्षेत्रसँ अनभिज्ञ रहलाक कारणेँ दिन भरि गहन-वनमे भटकैत रहलाह। भयानक जंगली जानवरसँ बचैत साँझ भेलापर ई एकटा गुफा लग पहुँचलाह, जतय मनुष्य होयबाक आभास लगलनि। ई डेराइत-डेराइत रातिमे ओहिठाम ठहरि गेलाह। मध्य रातिमे गुफाक भीतर प्रकाश देखलनि, मुदा ओहिमे प्रवेश करबाक साहस नहि भेलनि। ब्रह्म-मुहूर्त्तमे एकटा महात्मा बाहर अयलाह आ हिनकासँ सम्पूर्ण वृत्तान्त सूनि एवं विभिन्न तरहक प्रश्न पुछि हिनका योगक शिक्षा देब स्वीकार कयलनि। उक्त महात्मा गोरखनाथक शिष्यक शिष्य

लम्बनाथ स्वामी छलाह। लक्ष्मीनाथ एतय एकान्त साधना, ज्ञानोपदेश एवं विधिवत् योगाभ्यासक अतिरिक्त स्वरचित भजन सेहो गबैत छलाह। हिनक काव्य-प्रतिभा देखि गुरु हिनका समाजमे जाय भजनादिसँ जन-कल्याण करबाक विचार देलथिन तथा भागवत धर्मक प्रचार-प्रसार करबाक हेतु कहलथिन। ई ओतयसँ प्रस्थान कऽ रहुआ गामक एक पीपरक गाछक नीचाँ तीन वर्ष धरि अत्यन्त कठिन योगाभ्यास कऽ अनेक योग-सिद्धि प्राप्त कयलनि।

लक्ष्मीनाथ सर्वप्रथम मुंगेर जिलाक गाम सभमे भ्रमण करैत रहलाह। कान्तिमय भव्य आकृतिक कारणेँ एहि नव महात्माक ख्याति बढ़य लागल। ई सूनि शकरपुरा स्टेटक बाबू राय लक्ष्मीनारायण सिंह अनुनय-विनय कऽ हिनका अपना ओहिठाम बजौलथिन । श्रद्धापूर्वक हिनक सत्कार कयलथिन, मुदा भोजन करबैत काल हुनका आँखिमे नोर देखि लक्ष्मीनाथ आश्चर्य-चकित भऽ जिज्ञासा कयलनि। ओ सन्तान अभावक अपन आन्तरिक व्यथा प्रकट कयलनि। भीतरसँ रुष्ट भऽ गेलाक किछु कालक उपरान्त लक्ष्मीनाथ बिहुँसिकेँ कहलथिन- ''हम एखन अहाँक अन्न मात्र दुइ कौर ग्रहण कयने छी। ईश्वरक इच्छा भेलनि तँ अहाँकेँ दुइटा पुत्र होयत।'' पुत्र प्राप्तिक बाद वनगाँव, फटकी, लखनौर, आओर परसरमाक कुटी एवं ठाकुरबाड़ीक निर्माणमे सभ खर्च ओ स्वेच्छासँ वहन कयलनि। एखनहुँ हुनक परिवारक लोक लक्ष्मीनाथक भक्त छथि।

लक्ष्मीनाथ घुमैत-फिरैत वनगाँव पहुँचलाह। वनगाँव मिथिलाक सहरसा जिला मध्य सभसँ पैघ मैथिल ब्राह्मणक बस्ती अछि। ओहिठामक अधिकांश व्यक्ति अशिक्षित आओर कृषक छल। हुनका लोकनिमे धर्मक प्रति निष्ठा प्रबल छलनि। ओहिठामक ग्रामीण एहि अपरिचित 'बाबा' क स्वागत कयलनि। प्रकृतिसँ सरल होयबाक कारणेँ अतिरिक्त बोल-चाल सेहो हुनके लोकनिक बोलीमे ई करैत छलाह। फलस्वरूप किछुए दिनमे ई ओहिठामक लोकक आत्मीय बनि गेलाह। जखन ग्रामीणकेँ पता लगलनि जे ई परसरमाक मैथिल ब्राह्मण छथि तँ लोक हिनका आग्रह पूर्वक यज्ञोपवीत पहिरा देलनि। ई ग्रामीणक प्रति दयाशील रहलाक कारणेँ हुनका लोकनिक एहि ज्ञानहीन आचरणसँ उबिकेँ भगलाह नहि, अपितु हुनका सभकेँ स्वरचित गीत सुनबैत रहलाह। सत्संगक क्रममे विभिन्न आध्यात्मिक दृष्टान्तक माध्यमसँ हुनका

लोकनिक मनोरंजन करैत हुनका लोकनिक अज्ञानताकेँ हँटयबाक प्रयत्न करैत रहलाह।

तद्‌युगीन धार्मिक कट्टरता एवं जाति-पाँतिक दूषित भावनासँ ई प्रभावित नहि छलाह। यैह कारण छल जे क्रिश्चियन धर्मावलम्बी जॉन जे वनगाँवसँ सटले पूब बरियाही कोठीक साहेब छलाह, तनिकहु अपन शिष्य बनयबामे कोनो तरहक मीन-मेष नहि कयलनि। ई बात कम महत्त्व नहि रखैत अछि जे इङलैण्डसँ अपन धर्म एवं सभ्यता-संस्कृतिक प्रचार-प्रसारक उद्देश्यसँ भारत आयल एक अंग्रेज हिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्वसँ प्रभावित भऽ पत्नी सहित हिनक शिष्यत्व स्वीकार कयलनि। जॉन लक्ष्मीनाथक भाषा-शैलीमे पदक रचना सेहो कयलनि। लक्ष्मीनाथ अन्त धरि एकटा जागरूक समाजसुधारकक रूपमे रहलाह। ई भारतक विभिन्न तीर्थस्थान तथा तिब्बत, नेपाल विदेश भ्रमण सेहो कयलनि। हिनक भ्रमणशीलतासँ लोक लाभान्वित होइत छल। देश-विदेशक रीति-रिवाज, रहन-सहन, कलाकृति आओर प्रमुख घटना आदिक वृत्तान्त सुनाय ई लोकक मानसिक विकास करैत छलाह।

लक्ष्मीनाथ आजीवन काव्य-साधनामे तल्लीन रहलाह। हिनक काव्य-रचनाक प्रमुख विषय छल राम आओर कृष्णक लीला वर्णन। एकर अतिरिक्त ई विभिन्न तरहक उपदेशात्मक भजनक रचना सेहो कयलनि। सन्तक लेल गृहविहीन होयबाक विधान अछि तथा हुनका लेल कतहु अधिक दिन ठहरि साहचर्य बढ़ायब सेहो निषिद्ध अछि। मुदा लक्ष्मीनाथ एहि प्राचीन सिद्धान्तसँ विमुख भऽ परिवार आओर समाजक बीच रहि काव्यक रचना कयलनि एवं क्षेत्रीय रीति-रिवाज, विश्वास, दृश्य आदि अनुभवक समावेश अनिवार्य रूपेँ अपना काव्यमे कयलनि। हिनक काव्यक भाषा शुद्ध ब्रजभाषा, अवधी वा खड़ी बोली नहि, मैथिली मिश्रित साधुकरी भाषा अछि। हिनक रचना हम कतहु कलात्मकता, कतहु पौराणिकता आओर कतहु भक्तिभावनासँ अनुप्राणित देखैत छी। लोकक मनोरंजन दिस अधिक ध्यान देब हुनक उद्देश्य नहि छलनि। लक्ष्मीनाथक दृष्टिमे भक्ति प्रत्येक मनुष्यक लेल आवश्यक अछि। भक्तिक लेल वैराग्य आवश्यक तँ अछि, मुदा अनिवार्य नहि।

लक्ष्मीनाथ प्रत्येक व्यक्तिकेँ ईश्वरसँ स्नेह कऽ कृतार्थ होयबाक संदेश देलनि अछि। विशेष कऽ एहि कलियुगक विषमतासँ भक्तिए त्राण देआ सकैत अछि। जँ व्यक्ति ईश्वरक चरणमे पूर्णतः अपनाकेँ समर्पित कऽ देथि आओर तन, मन, धनसँ हुनक आराधनामे तत्पर रहथि तँ हुनक जीवन मंगलमय भऽ जायत। अनेको संकटसँ त्रस्त ग्रामीण जनताक लेल हिनक ई सन्देश अमृततुल्य सिद्ध भेल।

●

शब्दार्थ : अभेद्य = अविभाज्य; हतप्रभ = जकर काँति क्षीण भऽ गेल हो; निषिद्ध = जकर निषेध कयल गेल हो; दूषित; अनुप्राणित = प्रेरित ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लक्ष्मीनाथ गोसाइँक जन्म कोन इस्वीमे कतय भेल छल ?
2. लक्ष्मीनाथ गोसाइँ कोन तरहक स्वभावक रहथि ?
3. लक्ष्मीनाथ गोसाइँक गुरुक की नाम छल ? ओ किएक प्रसिद्ध छलाह?
4. लक्ष्मीनाथ गोसाइँ घरसँ किएक पड़यलाह ?
5. घर घुमबाक लेल ओ कोन शर्त रखलनि ?
6. भोजन करैत काल बाबू राय लक्ष्मीनारायण सिंह लक्ष्मीनाथ गोसाइँसँ की कहलनि? लक्ष्मीनाथ हुनका की आशीर्वाद देलनि ?
7. लक्ष्मीनाथ गोसाइँ कोन तरहक पद्यक रचना कयलनि ? हुनक काव्यक भाषा ओ प्रमुख विषय की होइत छलनि ?

गतिविधिः

1. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
   चलिये कंत ओहि देश जहाँ निज घर अपना
   . . . . ।।
2. साध्वी, तद्‌युगीन, उन्मुक्त, आवेश आओर जिज्ञासा शब्दक अर्थ शब्दकोषसँ लिखू।
3. पाठमे वर्णित मिथिलाक गाम, अन्य स्थान एवं भाषा सभक नामक सूची बनाऊ ।

4. गौतम, याज्ञवल्क्य, कणाद, मण्डन मिश्र, वाचस्पति आदि मिथिलाक मान्य दार्शनिक लोकनिक कृतित्वसँ अवगत होयबा एवं लिपिबद्ध करबा लेल शिक्षक अथवा पुस्तकालयसँ सहयोग लियऽ ।

5. पाठमे प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दक दू-दू टा पर्यायवाची शब्द लिखू : संसार, प्रकाश, साँझ, ईश्वर, कृषक एवं कृष्ण ।

निर्देश :

(क) लक्ष्मीनाथ गोसाइँ सन मिथिलाक दोसर संत सभक जीवनीसँ छात्रकेँ अवगत कराओल जाय।

(ख) लक्ष्मीनाथ गोसाइँक कृति सभसँ छात्रकेँ अवगत कराओल जाय।

(ग) वैराग्य की अछि? शिक्षक छात्रकेँ बुझाबथि।

(घ) पाठमे महान दार्शनिक शंकराचार्यक चर्च आयल अछि। शंकराचार्यक अद्वैत दर्शन, तद्‌युगीन भारतीय चिन्तन ओ संस्कृतिकेँ कोन स्तर धरि प्रभावित कयलक ? छात्रकेँ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यमे बुझाओल जाय ।

(ङ) लक्ष्मीनाथ गोसाइँक जीवन चरित्रसँ की शिक्षा भेटैत अछि ? छात्रक ज्ञान विस्तार करू ।

□